9

# उज़री राज्य

## रहूबियाम के राजा बनने से सामरिया के पतन तक 975-722 ई.पू. (1 राजा 12-22; 2 राजा 1-17)

### I. परिचायक

यहां से इब्रानी इतिहास का फैलता प्रवाह दो धाराओं में बंट जाता है। इसकी कहानी का विस्तार और अधिक जटिल हो जाता है। यहां से हमारे अध्याय कालक्रम के कालों से मेल खाते हैं। इसी योजना से इस और अगले अध्याय के शीघ्र के रूप में ''दोहरा राज्य'' और ''अकेला यहूदा'' मिलेंगे; परन्तु ऐतिहासिक एकता और सादगी के लिए दोनों राज्यों को विभाजन के अनुसार अलग-अलग देखना ठीक रहेगा।

**1. फूट का मूल।** *-क. इसकी जड़ें।*-''राज्य का विघटन एक दिन में नहीं, सदियों में हुआ।'' यहोशू से लेकर दाऊद तक के पूरे काल में यूसुफ के दो गोत्र (एप्रैम, मनश्शै) और बिन्यामीन के गोत्रों को यहूदा के गोत्र से अधिक प्रमुखता दी जाती थी। एप्रैम के गोत्र से यहोशू, दबोरा और शमूएल थे; मनश्शै से, गिदोन और अबिमेलेक; बिन्यामीन से, शाऊल और योनातन थे।

एप्रैम के गोत्र में विशेष तौर पर श्रेष्ठता और स्वतन्त्रता की घमण्डपूर्ण सोच बार-बार दिखती थी; [1] और घटनाओं से यह सिद्ध हो गया था कि इस गोत्र के अगुवे यहूदा के शासन से अलग होने के लिए केवल समय की प्रतीक्षा कर रहे थे।

*ख. रहूबियाम का राज्यारोहण और नीति।*-''सुलैमान की एक हज़ार पत्नियां थीं और एक ही बेटा था, वह भी मूर्ख।'' रहूबियाम के गद्दी पर बैठने पर लोगों ने उससे उन करों को कम करने की बिनती की जो सुलैमान के समय लोगों का दमन करने वाले बन गए थे। रहूबियाम ने अपने बुज़ुर्ग सलाहकारों के सुझाव की अवहेलना करके जवान दोस्तों की बात मानकर यही जवाब दिया कि उसकी छोटी अंगुली भी उसके पिता की कमर से मोटी होगी।

*ग. यारोबाम और विद्रोह।*-सुलैमान का यारोबाम नामक एक बहुत ही योग्य अधिकारी था। यह विशेष बात है कि वह एक एप्रैमी था। सुलैमान की मूर्तिपूजा के कारण, जिससे धर्मतन्त्र के मूल नियम का उल्लंघन हुआ था, अहिय्याह नबी ने राज्य के बंटने और दस गोत्रों पर यारोबाम के होने की भविष्यवाणी कर दी थी। यारोबाम पर सुलैमान को शक हो गया, जिस कारण उसे मिसर में भागना पड़ा, परन्तु सुलैमान की मृत्यु के बाद वह वापस लौट आया। कर कम करने से रहूबियाम के साफ़ इन्कार के बाद, दस गोत्रों ने यारोबाम की अगुआई में विद्रोह कर दिया। इसके परिणामस्वरूप दो विरोधी राज्य बन गए:

(1) यहूदा और बिन्यामीन के दो गोत्रों वाला दक्षिणी राज्य, जिसे **यहूदा** कहा गया।

(2) दस गोत्रों का उज़री राज्य जिसे **इस्राएल** कहा गया।

**2. दोनों राज्यों की तुलना।** –*क. इलाका और जनसंख्या।*–एक महत्वपूर्ण अर्थ में, दक्षिणी राज्य की अपेक्षा उज़री राज्य अधिक कौमी था; इसमें बारह में से दस गोत्र थे, इसलिए इसे राष्ट्रीय नाम अर्थात इस्राएल मिला रहा। बड़ा होने के अलावा यह प्राकृतिक संसाधनों और ऐतिहासिक सज़्बन्धों में भी समृद्ध था। यहूदा के पास यरूशलेम और हेब्रोम ही थे, जबकि इस्राएल के पास यादों की दौलत के साथ शेकेम; मन्दिर का प्रारज़्भिक स्थान, शीलो; बेतेल, रामा और गिलगाल जहां शमूएल ने नबियों की पाठशालाएं चलाई थीं; और दान जो आराधना का लज़्बे समय से स्थान था (न्यायियों 18:14-31)। इससे भी बढ़कर, दाऊद के साम्राज्य की निर्भरता और सज़्बन्ध, सब सज़्भालकर रखे गए थे, मुज़्यत: इस्राएल के पास थे। परन्तु समय बीतने के साथ इस्राएल ने लेवियों और अन्य अधिक आत्मिक तत्वों के यहूदा में चले जाने से इन्हें खो दिया (2 इति. 15:9, 10)।

*ख. उनका धर्म।*–पहले से अंतिम तक, इस्राएल के सब राजा मूर्तिपूजक थे, और उनके लोग उनसे भी आगे बढ़ते गए। तो भी यह ध्यान देना दिलचस्प लगता है कि लगभग सभी प्रारज़्भिक भविष्यवज़्ता या तो इस्राएल से थे या उन्हें इस्राएल में मिशन पर भेजा गया। अबिय्याह, शमायाह, एलिय्याह, अलीशा, मीकायाह, योना, होशे, आमोस, जकर्याह, येहू, सब या तो जन्म से या मिशन के कारण उज़री भविष्यवज़्ता थे। यहूदा, जो अज़्सर मूर्तिपूजा करता था, यहोवा के प्रति अधिक निष्ठावान था।

*ग. स्थिरता के तत्व।*–यहूदा की बड़ी स्थिरता निज़्न तथ्यों में देखी जाती है: (1) दाऊद और सुलैमान और मन्दिर का नगर **यरूशलेम** ही यहूदा की राजधानी रहा। इस्राएल की कई राजधानियां रहीं: शेकेम, तिर्सा और सामरिया। (2) इस्राएल केवल दो सौ पचास वर्ष तक रहा; उस दौरान उन्नीस राजाओं के राजवंश सिंहासन पर बैठे। हर नया राजवंश खूनी क्रांति से शुरू हुआ, और उसका अंत भी खून से ही हुआ। यहूदा केवल बीस शासकों के साथ लगभग चार सौ वर्ष तक रहा, जिनमें से बलपूर्वक अधिकार करने वाले अतल्याह को छोड़ सब दाऊद के वंश से थे।

## II. चार काल

उज़री राज्य के इतिहास को धार्मिक रूप से चार असमान कालों में बांटा जा सकता है:

**1. मूर्तिपूजा का जड़ पकड़ना; पचास वर्ष, तीन राजवंश, पांच राजा।** –प्रमुख व्यज़्ति राज्य का संस्थापक यारोबाम था। अपने विरोधी की राजधानी में आराधना की आज्ञा का उल्लंघन था। सुलैमान की पूर्तिपूजा हमें बहुत बुरी लगती है, तो भी पवित्र इतिहासकार यारोबाम का उल्लेख करके हमारे रोंगटे खड़े कर देता है। ''उन पापों के कारण जो यारोबाम ने किए और इस्राएल से कराए थे,''[2] उन शज़्दों का रूप हैं जिनके आधार पर उसे सदा के लिए घृणित[3] माना जाएगा। यारोबाम दोराहे पर खड़ा था। परमेश्वर की इच्छा से उसे एक राजवंश और एक राज्य स्थापित करना था। उस राजवंश और राज्य का भविष्य उज़्वल होता;

परन्तु उसके स्थापित करने वाले पर भी निर्भर है कि वह इब्राहीम है या यारोबाम; और यारोबाम ने अपनी आधी सांसारिक और आधी धार्मिक नीति से सदा के लिए इस्राएल का भविष्य तबाह कर दिया। उसने एक नई याजकाई और धार्मिक पर्वों का एक नया ढंग शुरू कर दिया। उस समय राजनैतिक तौर पर वह नीति सही लगी, परन्तु उसका अंत विनाशकारी हुआ। इस्राएल की राजनैतिक सुरक्षा इसकी धार्मिक शुद्धता में है। इस काल के बाकी राजा नादाब, बाशा, एला और जिम्री थे, जिनमें अंतिम राजा बाशा की तरह बलपूर्वक अधिकार करने वाला होकर सात दिन के लज्जाजनक शासन करने के बाद खत्म हो गया। इस पूरे काल में इस्राएल और यहूदा एक दूसरे के विरोधी रहे, और कई बार उनमें आमने-सामने युद्ध हुआ।

**2. मूर्तिपूजा विजयी; पचास वर्ष, एक राजवंश, चार राजा।** *-क. ओम्री और नई राजधानी।* -राजवंश का संस्थापक एक सैनिक अधिकारी था जिसका नाम ओम्री था। बलपूर्वक राज्य करने वाले जिम्री को जल्दी से हराकर तिज़्नी नामक एक साहसिक व्यज़्ति के साथ सफलतापूर्वक गृहयुद्ध करके वह सिंहासन पर बैठ गया। जिम्री ने तिर्सा में राजभवन के गुज़्भर में जाकर महल को जला दिया जिसमें वह स्वयं भी जल गया। ओम्री ने तिर्सा को छोड़ दिया और सामरिया को खरीदकर बनाया, जो राज्य के पतन तक राजधानी रही, और बाद के एक ज़िले और लोगों को इसका नाम दिया।

*ख. अहाब; ईज़ेबेल; बाल की पूजा।* -ओम्री के पुत्र अहाब ने सिदोनियों के याजक-राजा एतबाल की लड़की ईज़ेबेल से विवाह कर लिया। दोनों राज्यों के इब्रानी शासकों की कई पीढ़ियों में मूर्तिपूजक लहू और धर्म ज़हर की तरह दौड़ता रहा। वह एक घमण्डी और कट्टर स्त्री थी जिसका नाम लगभग तीन हज़ार वर्ष तक स्त्री जाति में सबसे घृणा का पर्याय बना रहा। उसने बाल की व्यभिचार भरी पूजा आरज़्भ की और इतना भयंकर सताव शुरू किया कि यहोवा की आराधना, जो लोगों में होती थी, बिल्कुल खत्म कर दी गई।

*ग. एलिय्याह का युग।* -इस काल का एक महत्वपूर्ण पात्र एलिय्याह नबी है। उसने अहाब के पाप बताकर दृढ़ता से उसका सामना किया; पूरे देश द्वारा परमेश्वर से फिर जाने के दण्ड के रूप में तीन वर्ष के अकाल की भविष्यवाणी की; करीत नामक नाले पर कौवे उसके लिए भोजन लाते थे, और बाद में ईज़ेबेल के देश में ही सारपत नगर की एक विधवा उसके लिए भोजन लाई; अंत में फिर से अहाब का सामना किया और करज़्मेल पर्वत पर एक राष्ट्रीय सभा बुलाई और वहां पर बाल और अश्तोरेत के सैकड़ों याजक-भविष्यवज़्ताओं को परीक्षा देने के लिए ललकारा: जिसका परमेश्वर आग से जवाब देगा वही देश का परमेश्वर माना जाएगा। भयभीत भीड़ जो परमेश्वर के उज़र से जिसने एलिय्याह के बलिदान को जला दिया था अपनी मूर्तिपूजा से थोड़ी देर के लिए हटकर, ने झूठे नबियों का नाश कर दिया। एलिय्याह की और प्रार्थना के उज़र में, लज़्बे समय से पड़ा सूखा भरपूर वर्षा से खत्म हो गया और एलिय्याह विजयी होकर अहाब के रथ के आगे-आगे यिज़्रेल तक दौड़ता गया। परन्तु कठोर इज़ेबेल ने एलिय्याह को जो होरेब को भाग गया था एक धमकी भरा संदेश भेजा। वहां परमेश्वर इस उदास नबी से मिलता है और उसे बताता है कि सात हज़ार लोग

और हैं जिन्होंने बाल के आगे कभी माथा नहीं टेका, जो ''इस्राएल के भीतर इस्राएल'' है और उसे अपना काम करने के लिए वापस भेजता है। एलिय्याह वापस आता है, अपनी जगह भविष्यवक्ता होने के लिए अलीशा का अभिषेक करता है, अहाब के घराने के अंत की घोषणा करता है और थोड़ी देर बाद ही आग के एक अर्थ में स्वर्ग में उठा लिया जाता है, जबकि ओम्री और अहाब का राजवंश निर्दयी येहू द्वारा लहू में भिगो दिया गया। मूसा के बाद, इस्राएल के सारे इतिहास में इब्रानी दिमाग पर किसी दूसरे नबी ने उतना प्रभाव नहीं डाला। उसके नाम के साथ प्रसिद्धि और कहावत जुड़ गई थी और उसके आने का पुराने नियम के अंतिम भविष्यवक्ता और नये नियम के लोगों के द्वारा आनन्दपूर्वक अनुमान लगाया गया था। और उसकी लिखी या बोली गई बात में से कोई भी हमारे पास नहीं है। अपने महान प्रतिरूप यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की तरह, इब्रानी नबियों की भूमिका में उन्हें उच्च स्थान उसकी बातों के कारण नहीं बल्कि उसके काम के कारण है।

*घ. राजनैतिक सम्बन्ध।* अहाब के घराने के बचे हुए राजा अहज्याह और यहोराम थे। यहूदा के प्रति शत्रुता अहाब के शासन के अंत तक जारी रही जब सूरिया के विरुद्ध एक समझौता और दो शाही परिवारों में अन्तर्विवाह हुआ। सूरिया के साथ युद्ध होते रहते थे और मोआब ने इस पर निर्भर रहना छोड़ दिया था, जो दाऊद के समय से था। मोआबी पत्थर द्वारा इस काल पर एक दिलचस्प किरण पड़ती है।[4] दूर देश अश्शूर, जो किसी समय भूमध्य क्षेत्र का शक्तिशाली भाग होता था, एक सौ पचास वर्षों की गुमनामी से फिर से सक्रिय होकर पश्चिम के बहुत से छोटे-छोटे राज्यों को अपने कब्ज़े में कर लेता है। इस समय से अश्शूरी शिलालेख हमारी कहानी पर प्रकाश डालते रहते हैं।

**3. मूर्तिपूजा पर रोक; एक सौ वर्ष; एक राजवंश, पांच शासक।** -यह छोटे राज्य की सबसे बड़ी समृद्धि का काल है; परन्तु यह आग की लपट की अंतिम चमक, अर्थात इस्राएल का ''भारतीय ग्रीष्मकाल'' है। अलीशा ने एलिय्याह से अधिक सफलता के साथ सुधार के काम को हाथ में लिया। राजवंश के संस्थापक, येहू ने क्रांति के एक चक्रवात में अहाब के घराने का अंत कर दिया और इसके साथ ही बाल की पूजा भी बंद हो गई; परन्तु उसने यारोबाम की बछड़े की पूजा फिर से बहाल कर दी। उसके बाद यहोआहाज़, योआश, यारोबाम द्वितीय, और जकर्याह गद्दी पर बैठे। यारोबाम द्वितीय ने इकतालीस वर्ष तक शासन किया और राज्य को बहुत बड़ी शक्ति बना दिया। उसे योना नबी का समर्थन मिलता था जिसे नीनवे के मिशन पर भेजा गया था, अब तेज़ी से पश्चिमी एशिया प्रभुत्व की ओर बढ़ रहा था। होशे नबी ने भी इस्राएल में मूर्तिपूजा के विरुद्ध अपनी आवाज बुलन्द की।

**4. मूर्तिपूजा का अंत विनाश; पचास वर्ष, चार राजवंश, पांच राजा।** -शलूम, मनहेम, पकह्याह, पेकह और होशे ऐसे राजा तो थे लेकिन केवल अश्शूर की कठपुतलियां ही थे। अश्शूरियों ने मनहेम के शासन में निर्वासन का काम आरम्भ किया। कुछ शक्ति रखने वाले राजा पेकह ने अश्शूर और छोटे यहूदा के विरुद्ध सूरिया के साथ एक समझौता किया, जो अश्शूर को कर देना ही था। अश्शूर के तिग्लत्पिलेसेर द्वितीय ने सूरिया के राज्य का अंत करके इस्राएल को एक भेंट दी। अंत तब आता है जब होशै अश्शूर के जुए से

विद्रोह कर देता है। शल्मनशेर चतुर्थ, देश पर आक्रमण करके सामरिया को अपने कज़्जे में ले लेता है। नगर के लोग तीन वर्ष तक डटे रहते हैं, जिस दौरान अश्शूरी सिंहासन पर शल्मनशेर की जगह सर्गोन गद्दी पर बैठ जाता है और दस गोत्रों को बंदी बनाकर ले जाता है, जिससे वह कभी वापस नहीं आते। यहोवा और अपने राष्ट्रीय उद्देश्य से बेईमानी करके वे सदा के लिए अपनी राष्ट्रीय पहचान खो देते हैं। देश में बाहर से लाए गए अश्शूरी लोग दस गोत्रों के बचे हुए लोगों के साथ मिल गए। दोगले धर्म वाली यह मिश्रित जाति, सदियों तक रही और मसीह के समय इन्हें सामरी कहा जाता था।

---

पाद टिप्पणियां

[1]देखिए यहोशू 17:14-18; न्यायियों 8:1-3; 12:1-6. [2]1 राजा 14:16. [3]येरेबाम को इस प्रकार लोगों में लज्जित किया गया। [4]देखिए एदरशेम, "हिस्ट्री ऑफ़ इज़राएल एण्ड ज्यूडाह," अंक 6, पृ. 112-117.